ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-310-313,YEAR- DEC.2016

''छायावाद'' एक मूल्यांकन

❑ डॉ0 सुमन ढाका

छायावाद की पृष्ठभूमि– साहित्य, समाज का शाश्वत, सम्बन्ध होता है, प्रत्येक सभ्य समाज को विरचित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है 'कविता'। इसी कारण उसे प्राणदायिनी औषधि भी कहा जा सकता है। समाज को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर करके स्थायी प्रेरणा–स्रोत बनने वाली छायावाद युग की कविता का भी समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इस सम्बन्ध की गहराई और व्यापकता को उस युग की परिस्थितियों और परिवेश से ही परखा जा सकता है।

सन् 1857 की क्रन्ति की चिंगारी ही धीरे–धीरे सुलगती रही और आगे चलकर यही अग्नि–पुंज स्वतन्त्रता–संघर्ष का पुण्य प्रारम्भ बना। ऐसे में आध् ाुनिक युग तक आकर राष्ट्रीय आकांक्षा की नवजागरणवादी भावना नैतिकता के साथ–साथ पुनरूत्थान दृष्टि से जुड़कर अधिक सक्रिय होने लगी। द्विवेदी युग में अतीत के गौरव का स्मरण करते हुए सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को रेखांकित कर गीतों में पिरोया जाना प्रारम्भ हुआ। छायावाद तक आते–आते विवेकानन्द के प्रेरक विचारों ने महर्षि अरविन्द के क्रान्तिकारी स्वर ने तथा महात्मागाँध ाी के अहिंसावादी सिद्धान्तों ने क्रमशः स्फूर्ति और उत्तेजना तथा आत्मिक खोज आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना की ज्योति का प्रज्ज्वलन और राष्ट्रीय भावना के सात्विक भाव का जन–जन तक प्रचार प्रसार करते हुए साहित्य की सृदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार कर दी। इसके साथ–साथ रवीन्द्रनथ टैगोर, लोकमान्य तिलक, सुभाष चन्द्र बोस तथा गोखले आदि राष्ट्र नेताओं ने जिस राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का आध्यात्मिक प्रसार किया छायावादी काव्य उसे अपने में आत्मसात करके साहित्य जगत में उपस्थित हुआ। राष्ट्रीयता की इस बुलन्दी का प्रखर स्वर छायावादी विशिष्ट स्वरूप को लेकर सामने आती है। स्पष्ट है कि युग परिवेश की प्रेरणा और उत्साह का आह्वान ही छायावादी काव्य में ध्वनित होकर उपस्थित होता है। छायावादी कवियों ने अनुभव किया कि देश की जनता को जीवित और जागृत रखने के लिए उसमें मानवीय रागात्मक–बोध और सौन्दर्य बोध का सम्मोहन भरना होगा इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के साथ ही विश्व दृष्टि का परिविस्तार किया ही और इस प्रकार एक बड़े व्यापक धरातल पर अपने काव्यान्दोलन का मंगलारम्भ किया। ऐसा विषद आयाम छायावाद के पूर्व या परवर्ती दूसरी किसी काव्य प्रवृत्ति के साथ नहीं दिखाई देता है।

युगीन परिस्थितियां– छायावादी कविता अपने युग की अवश्यम्भावी परिणति है। 1857 के बाद भारत में ब्रिटिश शासन पूरी शक्ति के साथ स्थापित हो गया। उसकी घोषणा और आरम्भिक सुधार योजना का भारतीय जनता ने स्वागत किया, किन्तु शीघ्र ही मोहभंग भी हो गया। प्रबुद्ध कवियों को यह पूर्वाभास हो गया कि इस साम्राज्यवादी उपनिवेश में उनकी अस्मिता अर्थात भारतीय संस्कृति का अस्तित्व संकट में है अस्तु, उनका राष्ट्रीय स्वाभिमान स्वतन्त्रता के लिए छटपटाने लगा किन्तु अंग्रेजों के दमनचक्र और शोषण के कारण उन्हें अभिव्यक्ति का मुक्त अवसर नहीं मिल सका देश की पीढ़ी रक्त क्रान्ति एवं असहयोग आन्दोलन की दिशा में सक्रिय थी। इस अवसर पर समाज के व्यापक नवजागरण की आवश्यकता थी। जनसाधारण में अपने स्वर्णिम अतीत के प्रति आस्था जागृत करनी थी, उन्हें एकता के सूत्र में बाँधना था और समकालीन राजनीतिक व्यवस्था से ऊपर उठकर उच्चतर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा

❑ एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चौमूं (राजस्थान), भारत

करनी थी बंगाल के अकाल से जो मृत्यु की विभीषिका छा गई थी और जलियाँ वालाबाग के सामूहिक हत्याकाण्ड का जो आतंक जन–जीवन में भर गया था, उसे दूर करने के लिए स्वर्णिम भविष्य की मंगलाशा पैदा करनी थी, अन्यथा हताश जन–समुदाय कुण्ठाग्रस्त हो जाता है जिससे समूची जाति के नष्ट–भ्रष्ट हो जाने की आशंका थी।

भूमिका– 'छायावाद' अपने आप में कविता का एक ऐसा युग है जिसका सम्बन्ध भावजगत से है, ह्रदय की भूमि से है। भावलोक की सत्ता ही अनुभव का विषय है, ह्रदय से जानने समझने और महसूस करने की वस्तु है।

उसी छायावाद में समय–समय पर अनेक कवियों का समावेश होता रहा। कभी वहाँ ''वृहत्रयी'' के रूप में ''प्रसाद'', ''निराला'' और 'पन्त' की चर्चा की जाती रही तो कभी 'बृहच्चतुष्ट्य' के रूप में इन तीनों कवियों के साथ 'महादेवी' का नाम जोड़कर देखा जाता रहा। कुल मिलाकर 'छायावाद' के प्रमुख कवियों या आधार –स्तम्भ में इन चारों महाकवियों की चर्चा, किसी न किसी रूप में चलती ही रही। यह अलग बात है कि इन चार कवियों के साथ–साथ छायावाद के अन्य कवियों में उत्तर छायावादी कवि या गौड़ छायावादी कवि कहकर माखन लाल चतुर्वेदी, डॉ0 राम कुमार वर्मा, जानकी बल्लभ शास्त्री, हरिकृष्ण प्रेमी, जनार्दन झाँ 'द्विज', लक्ष्मी नारायण मिश्र, इलाचन्द्र जोशी, डॉ0 नगेन्द्र, चन्द्र प्रकाश सिंह, विद्यावती कोकिल, तारा पाण्डेय, मुकुटधर पाण्डेय, उदय शंकर भट्ट तथा नरेन्द्र शर्मा आदि कवियों को भी इसमें समाविष्ट किया जाता रहा। छायावाद के चार प्रमुख कवियों से इतर इन सभी कवियों के काव्य और उनकी प्रवृत्तियों को लेकर विवाद भी चलते रहे परन्तु इन्हें छायावाद के प्रमुख कवियों में सर्वमान्यता से शामिल नहीं किया जा सका। अतः हम छायावाद के चार आधार स्तम्भ को ही स्वीकार करते हैं।

प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद– छायावाद के अग्रदूत या प्रवर्तक के रूप में हमारे सामने केवल जयशंकर प्रसाद का ही नाम उभरकर आता है। केवल भाषा या विषयवस्तु ही नहीं, प्रसाद ने जीवन दृष्टि भी नवीन बना डाली 20वीं शताब्दी को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से सर्वाधिक प्रभावित और प्रेरित करने वाले इस 'बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न' कलाकर ने कविता के साथ–साथ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध तथा समीक्षा आदि विभिन्न गद्य–पद्य विधाओं में अपनी ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक कविता के इतिहास में एकतरफा प्रेम सौन्दर्य तथा आनन्द और दूसरी तरफ भाव विचार आनन्द का अद्भुत सामान्जस्य देने वाला कवि मानव मूल्यों के बहुत व्यापक फलक का कवि है केवल 48 वर्ष की अवस्था में यक्षमा से पीड़ित इस महाकवि का 15 नवम्बर सन् 1937 को स्वर्गवास हो गया।

छायावाद का प्रारम्भ– छायावादी काव्य का प्रारम्भ कब हुआ? यह प्रश्न आज भी विवाद का विषय बना हुआ है। स्थूल रूप में यह माना जाता है कि द्विवेदी युग सन् 1920 के बाद निष्प्रभाव हो गया था। वस्तुतः आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका ''सरस्वती'' की सम्पादन अवधि को ही द्विवेदी युग की संज्ञा देना उपयुक्त है। उनके कार्यकाल के अन्तिम चरण में (सन् 1915 के आस–पास) छायावाद का आरम्भ अब तक लगभग सर्वमान्य हो गया है।

''छायावाद'' शब्द का प्रयोग– छायावादी शैली से सुपरिचित एक तत्कालीन कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय ने 70 वर्ष पूर्व जबलपुर से प्रकाशित 'श्री शारदा' नामक पत्रिका के 1920 के अंकों में ''हिन्दी कविता में छायावाद'' नाम से एक लेखमाला आरम्भ की और उसमें न केवल पहली बार छायावाद का नामकरण किया, बल्कि छायावादी कविता के आरम्भिक चरण–चिन्हों को अंकित भी किया। उन्होंने लिखा था– ''छायावाद एक मायामय सूक्ष्म वस्तु है। इसमें शब्द और अर्थ का सामन्जस्य बहुत कम रहता है।'' किन्तु इस लक्षण निरूपण को परवर्ती आलोचक तथा इतिहासकार नहीं समझ पाये। शायद इसीलिए आचार्य

राम चन्द्र शुक्ल ने यह अनुमान लगा लिया कि छायावाद और रहस्यवाद बंगाल के ब्रह्म समाजियों के छायापदों और रवीन्द्रनाथ टैगोर की रहस्यानुभूतियों का नव रूपान्तरण है तथा इनकी प्रेरणा भूमि है– यूरोप के इसाई प्रचारकों का रहस्य दर्शन अर्थात् फैंटसमाटा। उन्होंने छायावाद को वाच्यार्य की जगह लक्षक या अन्योक्ति परक शब्द प्रयोग को प्रश्रय देने वाली मात्र एक शैली घोषित कर दिया। आचार्य शुक्ल जैसे उद्भट समीक्षक द्वारा न पहचानी गयी इस छायावादी कविता की सही परख–पहचान अर्से तक दबी रही। परिणाम स्वरूप छायावाद के प्रवर्तक कवि और छायावादी धारा का सही उल्लेख नहीं हो पाया। किसी समीक्षक को मैथिलीशरण गुप्त प्रथम छायावादी प्रतीत हुए, किसी को शिया राम शरण गुप्त। इसी प्रकार माखन लाल चतुर्वेदी, प्रसाद, पन्त, निराला आदि को यह अलग–अलग यह श्रेय दिया जाता रहा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे पाश्चत्य प्रभाव प्रेरित वैयक्तिक स्वातन्त्रय का काव्य कहा तो आर्चाय नन्द दुलारे बाजपेयी ने इस सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का नवोन्मेष घोषित किया। डॉ0 नगेन्द्र इसे दमित रोमानी स्थूल वृत्ति की सूक्ष्म प्रतिक्रिया माने रहे तो शिवदान सिंह चौहान इसे पलायनोन्मुखी प्रवृत्ति कहते रहे। बिडम्बना यह है कि छायावाद के प्रवर्तक महाकवि प्रसाद ने ''काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध'' नामक कृति में स्वयं छायावाद विषयक एक घोषणा–पत्र प्रस्तुत किया था, किन्तु उसके मुख्य बिन्दुओं पर किसी का ध्यान नहीं गया।

छायावाद की अन्तर्वस्तु– छायावाद एक युग प्रवृत्ति है, इसलिए उसका अपना एक विशिष्ट युग बोध भी है। छायावादी काव्य की जिस अन्तर्वस्तु की चर्चा अब हम करने जा रहे हैं वह जितनी समसामयिक परिस्थितयों से प्रभावित है उतनी ही इस युग के कवियों की अन्तर्दृष्टि से भी प्रेरित है। ''प्रथम बसन्त के अग्रदूर'' के स्वाधीनता की भावना को नियन्त्रित करने वाले में कवि नवजागरण के दूत बनकर हमारे सामने आते हैं। इसी कारण छायावादी काव्य को 'शक्ति काव्य' भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में आधुनिक कविता का इतिहास देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि पहली बार छायावाद को ही विराट मानवीय वेदना की भाव–भूमि पर प्रतिष्ठित होने का श्रेय प्राप्त होता है। यद्यपि इस काव्य को उद्‌दाम–वैयक्तिकता का विस्फोट माना गया है, फिर भी विश्व दृष्टि को आत्मसात करने में छायावाद ने जो पहल की है। वह किसी अन्य काव्यान्दोलन ने नहीं की। वैज्ञानिक–युग की अतिबौद्धिकता और उससे पैदा होने वाली जीवन की विभीषिकाएं जब मनुष्य समाज को घेरने लगी तो जनजीवन को मंगलमय–भविष्य और कल्याणकारी कल के सुनहरे स्पप्न दिखाकर कुण्ठित मानसिकता के चंगुल में जाने से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया छायावाद ने इस निबन्ध उन्मुक्त तथा स्वच्छन्द जीवन की आकांक्षाओं पर लगाए गए सभी बंधनों को काट फेंकने का जीवन–कार्य इस काव्य ने किया।

छायावाद बूंद और समुद्र व्यष्टि और समष्टि या मानव और समाज–दोनों का अपूर्ण समन्चय अपने भीतर करता चलता है खूबी यह है कि व्यक्ति स्वातन्त्रय को प्रेरित करते हुए विश्वबोध में उसका विलय कर देना छायावाद की सफलतम उपलब्धि है। प्रत्येक देशवासी में स्वतन्त्रता की भावना आत्माभिक्ति की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता की प्रतिष्ठा यही सब छायावाद के साहित्यिक आन्दोलन को जीवन बनाते हैं निराला जब यह कहते हैं–

''मैने मैं शैली अपनाई''

तो यहाँ 'मैं' कहकर समूचे युग की पीड़ा को वे अपनी निधि मानकर चलते हैं। प्रसाद जी भी ''आँसू'' में इसी प्रकार वैयक्तिक विरह को विश्ववेदना में परिणत करके यही कामना करते हैं–

''चुन–चुन ले रे कन–कन से जगती की सजग व्यथाएं'' इसी प्रकार पन्त निराला और महादेवी के काव्य में आत्माभिव्यक्ति का यह स्वर कई स्थानों पर देखने को मिलता है। पन्त भी जहाँ स्व को सम्बोधित करते हैं, वही उनका आत्ममुखर हो जाता है। पहले वे प्रकृति चित्रण करते हैं और बाद में उसी में आत्मदर्शन करने लगते हैं।

इसी स्वातन्त्रय भाव की आत्माभिव्यक्ति महादेवी में

भी सहज ही मिल जाती है। "रहने दो हे देव! अरे ये मिटने का अधिकार" कहने वाली महादेवी का पथ ही निर्वाण बन जाता है कभी वे "मैं" का विस्तार कर देती है तो कभी उसे क्षणभंगुर घोषित कर उमड़ कर मिट जाने वाली बदली बना देती हैं—

मैं नीर भरी दुख की बदली विस्तृत नभ का कोना—कोना मेरा न कभी अपना होना परिचय इतना इतिहास यही उमड़ी कल थी मिट आज चली।

निष्कर्ष— स्वानुभूति, कल्पना, प्रकृति का मानवीकरण, लाक्षणिक विचित्रता मूर्तिमत्ता तथा आध्यात्मिक—छाया आदि विशेषताओं से सम्पन्न छायावादी काव्य में व्यक्ति की स्वाधीनता की भावना से उत्पन्न सौन्दर्य को ही सम्पूर्ण समाज के स्वाधीनता—सौन्दर्य की अभिव्यक्ति बनाकर प्रस्तुत किया गया है। वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखने वाले छायावादी कवि की दृष्टि में उन्मादकता के साथ—साथ अंतरंगता का संस्पर्श भी रहा ही है। इतना ही नहीं कुछ समय बाद छायावाद के लिए 'रोमैण्टिसिज्म' शब्द का प्रयोग भी किया गया।

अतः छायावाद विदेशी पराधीनता और स्वदेशी जीर्ण—शीर्ण रूढ़ियों से मुक्त होने के मूक प्रयासों का मुखर स्वर है इसमें राष्ट्रीय जागरण की चेतना प्रधान है। 'इन्दु', 'मतवाला' तथा 'सुधा' आदि पत्रिकाओं एवं 'पल्लव' और 'परिमल' की भूमिकाओं के माध्यम से जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नन्दन पन्त तथा महादेवी वर्मा ने छायावादी काव्य को आधुनिक हिन्दी कविता का 'उत्कर्ष काव्य' कहकर स्थापित किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयीं।
2. छायावाद : पुनर्मूल्यांक : सुमित्रानन्दन पन्त।
3. छायावाद युग : शंभूनाथ सिंह, सरस्वती मन्दिर, वाराणसी; 1962 ई0।
4. छायावाद के गौरव चिह्न : प्रो0 क्षेम।
5. छायावाद : डॉ0 नमवर सिंह, राजकमल प्रकाशन; दिल्ली।
6. छायावाद के आधार स्तम्भ : गंगा प्रसाद पाण्डेय।
7. छायावादी कवियों का सौन्दर्य विधान : डॉ0 सूर्य प्रकाश दीक्षित।
8. छायावाद : राजेश्वर दयाल सक्सेना।
9. छायावादी काव्य : डॉ0 कृष्ण चन्द्र वर्मा, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, मध्य प्रदेश।
10. नवजागरण और छायावाद : महेन्द्र नाथ राम, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
11. जयशंकर प्रसाद : नन्द दुलारे बाजपेयी, भारतीय भण्डार, इलाहाबाद।
12. जयशंकर प्रसाद, रमेश चन्द्र शाह, साहित्य अकादमी, दिल्ली सन् 1984.
13. प्रसाद का काव्य, डॉ0 प्रेम शंकर, भारती भण्डार सन् 1986.